VOLUME-7, ISSUE-4, APRIL-2018 • PRINT ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Education

भारत में में स्काउटिंग व गाइडिंग की भूमिका का अध्ययन

Mrs. Santosh Ph. D. Scholer Education Department Tantia University, Sri Ganganagar Rajasthan

Dr. Ram Pratap Jangu Principal

ABSTRACT

आज के युग में अनुशासनहीनता सबसे बड़ी समस्या है। अनुशासन के अभाव में बालक उस छेद वाले घड़े के समान है जिसमें नल से पानी तो भरता जाता है मगर छेद मे से बाहर निकलता रहता है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक अनुशासन बालक के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करते हैं।

अतः शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि विद्यालय में किताबी ज्ञान के साथ–साथ विभिन्न पाठ्य–सहगामी क्रियाएं व सह–अभिवृत्तियां जैसे :– खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान एवं अन्य विषयों से संबंधित कार्यक्रम, एन. सी. सी., एन. एस. एस. एवं स्काउटिंग इत्यादि का होना आवश्यक है जिनसे विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके।

KEYWORDS : स्काउटिंग, गाइडिंग, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, अनुशासन

परिचय :–

अनुशासन समाज एवं संगठन की अनिवार्य अपेक्षा है। सामुदायिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतत्रता पर नियंत्रण आवश्यक है। समाज और देश की रक्षा, समृद्धि और विकास में व्यक्तिगत जीवन के नियम सभी सामाजिक नियमों के समान नहीं होते है। ऐसी स्थिति में सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन का विधान व्यक्तिगत जीवन के नियमों से अधिक प्रभावी होता है और उसका पालन करना ही अनुशासन है। जब जीवन में सहिश्णुता होती है, सहनशीलता का गुण स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। यही गुण अनुशासन है।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वोन्नतोन्मुखी विकास यानि शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास करना है। शिक्षा मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति को तर्क के आधार पर सुलझाने का ज्ञान प्रदान करती है। विद्यालय स्तर पर छात्र–छात्राएँ वय–सन्धि पर होते हैं, जिनमें धैर्य एक ओर तो कम होता है दूसरी ओर धैर्य अपरिमित दिखाई देता है। विद्यालयों का वातावरण चाहे वो शैक्षिक हो या सह–शैक्षिक उसमें छात्रों की मानसिकता, उनकी इच्छाओं, सहज आकांक्षाओं को पूरा करते हुए, यदि विद्यालय संचालन किया जाए तो छात्रों में एक नवीन उत्साहजनक परिवर्तन दिखाई देता है जो छात्रों के साथ विद्यालयों के लिए भी अच्छी बातें है। इन सब से समाज भी उन्नत होता है। शिक्षण कार्य एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों का सन्तुलन उत्तम होना चाहिए, जिसमें छात्र स्वयं को चहुमुंखी विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ अनुभव करें।

जीवन में बालक बालिका जो भी बनना चाहते हैं उसका प्रतिबिम्ब उनकी गतिविधियों उनके क्रियाकलापों से लक्षित हो जाता है। विद्यालयों में छात्रों की रूचियों को जानने, उनमें परिष्कार कर उन्हे एक अच्छा षिक्षाविद् कलाकार, अभिनेता, खिलाड़ी, जन नेता बना सकते हैं। इन सब के लिए आवष्यकता है विद्यालयों में छात्रों को प्रतिदिन होने वाले आठ कालांषो से मुक्ति दिलाकार विभिन्न सह–षैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये।

विद्यालयी सह–षैक्षिक गतिविधियों के कई लाभ हैं सर्वप्रथम छात्र विद्यालय को घर के बाद अपनी पसन्द का दूसरा स्थान मानने लगता है। दूसरा छात्र विद्यालय में रुक कर रूचि से अध्ययन भी करता है। तीसरा विद्यालय में अनुशासनहीनता जैसी आम प्रवृत्ति कम होती है। सबसे बडा लाभ विद्यालय में उत्तीर्ण छात्रों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है और परीक्षा परिणाम श्रेष्ठतर होते है।

स्काउट का शाब्दिक अर्थ है – गुप्तचर, भेदिया, जासूस। फौज में जो चुस्त चालाक, साहसी हों, रास्ता बनाने वाले, नदी–नालों पर पुल बनाने, संकेतों द्वारा संवाद भेजने, घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करने तथा शत्रु की गतिविधियों का पता अपने अधिकारियों को देने का काम करते हैं उन्हे स्काउट कहा जाता है।

टीचर्स कॉलेज, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क के प्रोफेसर जेम्स ई. रसल ने लिखा है कि – "The programme of boy scouts is the man's job cut down to boy's size. It appeals to the boy not merely because he is boy, but because he is a man in making."

विश्व स्काउट संगठन (World Body of Scout Wing) :– यह एक अन्तर्राश्ट्रीय, गैर राजनीतिक, स्वैच्छिक संगठन है, जो अपने क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से कार्य करता है। वियव स्काउट संगठन के निम्नलिखित तीन अंग होते हैं –

1. **विश्व स्काउट सम्मेलन (World Conference of WOSM)** – यह एक तरह की सामान्य सभा है जिसमें वियव के सदस्य देयों के प्रतिनिधि होते हैं। एक देया का एक ही संगठन मान्य होता है। जहां एक से अधिक संगठन कार्यषील होते हैं उनका "फैडरेषन" अमान्य होता है। प्रत्येक देया को अधिकतम छः सदस्य भेजने का अधिकार होता है जिनका कार्यकाल छः वर्श का होता है।
2. **विश्व स्काउट कमेटी (World Committee of WOSM)** – विष्व कमेटी बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स का समूह है। यह एक प्रकार की कार्यकारिणी समिति है जिसमें 12 दर्षों से 12 सदस्य चयनित किए जाते हैं जिनका कार्यकाल 6 वर्श का होता है। प्रत्येक छः वर्श बाद आधे सदस्य सेवा मुक्त कर दिये जाते हैं। विष्व स्काउट सम्मेलन द्वारा निर्धारित नीति तथा निदर्षों का कार्यान्वयन करना इस कमेटी का कार्य होता है।
3. **विश्व स्काउट ब्यूरो (World Bureau of WOSM)** – यह विश्व स्काउट संगठन का सचिवालय है जिसका **प्रधान कार्यालय स्विट्जरलैंड के प्रसिद्ध नगर जिनेवा** में स्थित है। विष्व स्काउट सम्मेलन तथा विष्व स्काउट कमेटी के निर्णयों का कार्यान्वयन इस ब्यूरो का कार्य है। विष्व स्काउट संगठन का कार्य निम्नलिखित छः क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से सम्पन्न होता है –

क्र. सं.	क्षेत्र	क्षेत्रीय कार्यालय	सदस्य देशो की संख्या
I.	अफ्रीकी क्षेत्र	लागोस, केन्या	34
II.	अरब क्षेत्र	काहिरा, मिश्र	19
III.	एषिया प्रषान्त क्षेत्र	मनीला, फिलिपाइन्स	24
IV.	यूरोपीय क्षेत्र	जिनेवा, स्विट्जरलैंड	37
V.	अमेरिकी क्षेत्र	मेक्सिको, कोस्टारिका	32
VI.	यूरेषिया क्षेत्र	आरमीनिया, बेलारूस, जार्जिया, तजाकिस्तान, मेल्डोवा	05

विश्व गाइड संगठन (World Body of Guide Wing) :– विष्व गर्ल गाइड और गर्ल स्काउट एक शैक्षिक संगठन है जो धर्म, वंश, राष्ट्रीयता अथवा अन्य परिस्थितिजन्य भेदभाव से परे सभी बालिकाओं और युवतियों के लिए खुला है तथा लार्ड बेडन पॉवल द्वारा निर्धारित सिद्धान्तो पर आधारित युवतियों के विकास हेतु कटिबद्ध है।

विष्व गाइड संगठन में तीन अंग कार्यरत है –

1. **विश्व सम्मेलन (World Conference)** :– इसका मुख्य कार्य नीति निर्धारण तथा दिषा निर्देषन देना है तथा स्थायी अथवा सहयोगी सदस्य के रूप में सदस्यता का निर्धारण करना है तथा विष्व समिति का चयन करना है। प्रत्येक सदस्य देष को छः सदस्य विष्व सम्मेलन के लिए भेजने का अधिकार होता है जिनका कार्यकाल छः वर्श का होता है।
2. **विश्व बोर्ड (World Board)** :– पूर्व में जिसे विष्व समिति के नाम से जाना जाता था उसे अब विश्व बोर्ड का नाम दिया गया है जिसके लिए विष्व सम्मेलन द्वारा 12 देषों के 12 सदस्यों का चयन किया जाता है। प्रत्येक सदस्य का कार्यकाल 9 वर्श का होता है। यह बोर्ड विष्व सम्मेलन द्वारा निर्धारित नीतियों तथा कार्यों का क्रियान्वयन कराने का कार्य करता है।
3. **विश्व ब्यूरो (World Bureau)** :– यह संगठन सचिवालय का है जिसका कार्य विष्व सम्मेलन तथा विश्व बोर्ड के निर्णयों को मूर्त रूप देना है। विष्व गाइड संगठन की स्थापना 1928 ई. में लंदन (इंग्लैंड) में हुई। इसका **सचिवालय 132, एवरी स्ट्रीट, वेस्ट मिनिस्टर्स, लन्दन** में स्थित है, जहां से सभी क्षेत्रीय केन्द्रो का संचालन होता है। विष्व गाइड संगठन के कार्यों को गतिषीलता प्रदान करने के लिए सदस्य देषों द्वारा चार स्वैच्छिक संगठनों एवं एक क्षेत्रीय समूह (अफ्रीकी क्षेत्र, एषिया–प्रषान्त क्षेत्र, यूरोपीय क्षेत्र, पष्चिमी वृत तथा अरब क्षेत्रीय समूह) निर्मित किए गये हैं। **भारत एशिया–प्रशान्त क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, जिसका मुख्यालय लन्दन में स्थित है।**

भारत में स्काउटिंग व गाइडिंग :–

भारत में 1909 में बॉय स्काउटिंग व 1911 में गर्ल गाइडिंग प्रारम्भ हुई। प्रथम ट्रुप सन् 1909 में बैंगलोर में भारतीय नौ सेना के अवकाष प्राप्त अधिकारी कैप्टन टी.एच. बैकर के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ। इसी समय 1909 में स्कॉटिष चर्च मिषन के रैवरैन्ड

एलेक्जेन्डर ने भी एक ट्रुप प्रारम्भ कर इम्पीरियल प्रधान केन्द्र से मान्यता प्राप्त करने का प्रयास किया किन्तु ट्रुप में भारतीय बच्चे सम्मिलित होने के कारण मान्यता प्रदान नहीं की गई।

भारत में गाइडिंग :–

सन् 1910 में गाइडिंग से मिलती जुलती एक संस्था अमेरिकन मिषन स्कूल लखनऊ में खुली जिसका नाम गर्ल्स मैसेन्जर सर्विस था इसमें भारतीय लड़कियों को सम्मिलित किया जो गर्ल मैसेन्जर कहलाती थी किन्तु सर्वप्रथम गाइड कम्पनी 1911 में जबलपुर में खुली, फिर कलकत्ता तथा अन्य स्थानों में। इसका सीधा सम्बन्ध लन्दन से था और इसमें भारतीय लड़कियों के लिए कोई स्थान नहीं था। भारतीय लड़कियों को सन् 1911 में पुना में खुली कम्पनी में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। सर्वत्र गाइडिंग का संचालन इंग्लैण्ड से हो रहा था। भारत में सर्वप्रथम चीफ गाइड कमिष्नर श्रीमती एम. ए. वियर नियुक्त हुई थी।

राजस्थान में स्काउट व गाइड का इतिहास :–

राजस्थान जिसका मूल षिरोमणी राजपूताना था भारत का गौरव पूर्ण प्रान्त है। सत्र 1950 में ब्रिटिश काल की 18 रियासतों के राजा महाराजाओं द्वारा स्वेच्छा से अपनी सत्ता एवं अधिकारों का समर्पण किए जाने के फलस्वरूप इन रियासतों के एकीकरण से राजस्थान का रूप निखरा। इस एकीकरण के कारण पूरे क्षेत्र में स्काउटिंग–गाइडिंग की प्रगति प्रभावित हुई। रेवरेण्ड फादर ग्रेवियस के संरक्षण में प्रथम स्काउट ग्रुप अजमेर में प्रारम्भ हुआ।

1923–24 में जयपुर व जोधपुर में स्काउट ग्रुप प्रारम्भ होने लगे तथा इन्हीं दिनों बीकानेर, कोटा, करौली, अलवर, भरतपुर आदि स्थानों में भी आन्दोलन का स्वरूप निखरा। धीरे–धीरे षिक्षा जगत में आन्दोलन विकसित होने लगा। श्री मान् आमीन प्रथम स्काउट मास्टर थे जिनके नेतृत्व में 1921 में जब प्रिन्स ऑफ वेल्स का आगमन भारत में हुआ, स्काउटिंग का श्रीगणेश बीकानेर में हुआ। श्री एस. एन. मंजू प्रधानाध्यापक हाई स्कूल कोटा के संरक्षण में एवं स्काउट मास्टर पंडित उमाशंकर के नेतृत्व में प्रथम कोटा स्काउट ट्रुप 1920 में प्रारम्भ हुआ।

कालान्तर में सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप 7 नवम्बर 1950 को देश में संगठित स्वरूप प्राप्त हो सका एवं राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड नवम्बर 1950 में ही इससे सम्बद्ध हो गया। 5 अगस्त 1951 में इस एकीकृत स्वरूप में गर्ल गाइड एसोसिएषन भी सम्मिलित हो गया। इस प्रकार आन्दोलन का महायज्ञ पूर्ण हुआ। इस हेतु भारत के तत्कालीन षिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम का सराहनीय योगदान रहा जो अविस्मरणीय रहेगा तथा डॉ. हृद्धयनाथ कुंजरू के सद्प्रयत्नों से कल्पना पूर्णरूपेण साकार हो सकी।

राजस्थान राज्य वास्तव में भाग्यवान है कि उसे सर्व श्री जी. एस. बापना (प्रधान), श्री दीनबन्धु चौधरी (उप प्रधान), श्री परशुराम सुयल (उप प्रधान), स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य, स्टेट कमिश्नर स्काउट श्री विकास भाले, स्टेट कमिश्नर गाइड डॉ. वीणा प्रधान जैसे महानुभवों की प्रेरणा पूर्ण संरक्षण एवं नेतृत्व प्राप्त है जिसके फलस्वरूप राजस्थान न केवल भारत अपितु विदेषों से सम्मान प्राप्त कर रहा है। हम स्टेट चीफ कमिष्नर श्री श्री निरंजन आर्य के प्रति आभारी है जिनके सद्प्रयत्नों से दिनोदिन आन्दोलन फलफूल रहा है तथा प्रगति पथ पर अग्रसर है। इन्हीं के सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप आज केन्द्र व राज्य सरकार से आर्थिक अनुदान प्राप्त होने के फलस्वरूप गतिविधियों में विविधता, नवीनता एवं सामयिकता लाने में सफलता प्राप्त हो सकी है।

इस प्रकार राजस्थान में आन्दोलन स्वेच्छा से अनवरत 100 वर्शों से गतिमान रहकर युवा वर्ग को सुनागरिकता का प्रशिक्षण उपलब्ध करा भातृत्व एवं सद्भावनाओं का प्रादुर्भाव करते हुए संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टियों से प्रगति पथ पर अग्रसर है। राज्य में प्रषासनिक दृष्टि से 7 डिवीजनल एसोसिएषन, 33 रेवेन्यु जिलों में तहसील एवं पंचायत समिति आधार पर विभक्त 290 से अधिक स्थानीय एसोसिएषन सफलतापूर्वक कार्यरत है। संख्यात्मक दृष्टि से राजस्थान भारत में प्रथम स्थान पर है। गुणात्मक वृद्धि से भी अन्य राज्यों की अपेक्षा राजस्थान द्वारा अधिक फर्स्टक्लास स्काउट–गाइड, प्रेजीडेण्ट स्काउट–गाइड, रोवर–रेंजर्स, दो सितारा कब–बुलबुल तैयार किए जा रहे है। अतः भारत में राजस्थान अपना विषिष्ट स्थान रखता है।

राज्य व केन्द्र का पूरा संरक्षण आन्दोलन को प्राप्त है। यद्यपि आन्दोलन षिक्षा जगत के कोने–कोने में पूरे भारत में पहुंच चुका है। तथापि राज्य व केन्द्र के संरक्षण में बहुत से नए कार्यक्रम जनजीवन के विकास की ओर से जाने हेतु अपनाए जा रहे है तथा राजस्थान लगभग सभी कार्यक्रम हेतु सफलता पूर्वक पहल कर रहा है।

राज्य में स्काउट/गाइड केन्द्रो की स्थिति :–

राष्ट्र का मुख्य केन्द्र पंचमढ़ी, मध्यप्रदेष में है। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय स्तर पर प्रषिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए है। केन्द्रों की संख्या की दृष्टि से राजस्थान समूचे देष में प्रथम स्थान रखता है। वर्तमान में राजस्थान में निम्नांकित केन्द्र स्थित है–

1. **स्काउट वन जगतपुरा, सांगानेर (जयपुर):** यह जयपुर देहली रेलवे लाइन से 100 गज उत्तर की ओर स्थित है।
2. **गाइड प्रशिक्षण केन्द्र जगतपुरा, सांगानेर (जयपुर):** यह केन्द्र जगतपुरा स्टेषन से दक्षिण पूर्व में कुछ मीटर की दूरी पर गाइड प्रषिक्षण केन्द्र के नाम से है।
3. **विट्ठलेशवन चौपासनी (जोधपुर):** यह केन्द्र जोधपुर से 6 मील दूर चौपासनी ग्राम के पास स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 70 बीघा है।
4. **देवीकुण्ड सागर (बीकानेर):** यह केन्द्र बीकानेर नगर से 3 मील पूर्व की ओर स्थित है।
5. **स्काउट वन, आलनपुर (सवाईमाधोपुर):** यह केन्द्र सवाईमाधोपुर स्टेशन से डेढ़ मील दूरी पर आलनपुर ग्राम से बाहर स्थित है।
6. **उदयनिवास, उदयपुर** :– यह केन्द्र उदयपुर नगर से 8 मील दक्षिण पूर्व में उदयसागर के किनारे स्थित है।
7. **ओल्ड म्यूनिसिपल गोल्फ कोर्स आबू पर्वत** :– ग्रीष्मकालीन षिविरों के लिए आबू पर्वत पर बस स्टैण्ड से लगभग 1 मील पूर्व में 6 एकड़ का पहाड़ियों से घिरा एक सुन्दर प्रषिक्षण केन्द्र है।
8. **गौमुख मार्ग केन्द्र, आबू पर्वत** :– आबू पर्वत पर ही बस स्टेषन से लगभग एक मील दूरी पर गौमुख मार्ग में यह केन्द्र स्थित है। इसके चारों ओर घने वृक्ष व सुन्दर चट्टाने है।
9. **पुश्कर घाटी केन्द्र, अजमेर** :– अजमेर से लगभग 5 मील दूरी पर पुष्कर घाटी के नीचे पहाड़ियों घने फूल फलों व छायादार वृक्षों से घिरा यह प्रषिक्षण केन्द्र स्थित है।
10. **आलनिया, कोटा** :– कोटा नगर से 14 मील दूर आलनिया नदी के किनारे 35 एकड़ का यह केन्द्र स्थित है।

स्काउट व गाइड के उद्देश्य, नीति, नियम तथा संगठन :–

(अ) परिभाषा :– भारत स्काउट–गाइड नवयुवकों के लिए एक स्वयं सेवी, गैर–सरकारी, शैक्षिक आन्दोलन है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए बिना किसी जाति, वंश तथा भेदभाव के खुला है। यह 1907 में संस्थापक लार्ड बेडन पॉवल द्वारा संकल्पित किये गये लक्ष्य, सिद्धान्त तथा पद्धति के अनुरूप है।

(ब) उद्देश्य :– आंदोलन का उद्देश्य नवयुवकों के विकास में इस तरह योगदान करना है, जिससे उनकी पूर्ण शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक अन्तः शक्ति को व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नागरिकों के रूप में तथा स्थानीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के सदस्यों के रूप में प्राप्त किया जा सके।

(स) सिद्धांत :– स्काउट एवं गाइड आंदोलन निम्न सिद्धांतों पर आधारित है–

- ईश्वर के प्रति कर्तव्य – आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठा, धर्म के प्रति वफादारी की भावना को अभिव्यक्त करना तथा ईश्वर के प्रति उत्पन्न कर्त्तव्यों को स्वीकार करना।
  नोट– ईश्वर शब्द के स्थान पर इच्छानुसार 'धर्म' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं।
- दूसरों के प्रति कर्तव्य – सीनीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति, समझ और सहयोग की भावना से समन्वय रखते हुए अपने देश के प्रति वफादारी, अपने साथियों की गरिमा तथा विश्व की अखंडता के लिये अभिमान तथा सम्मान के साथ समाज के विकास में भाग लेना।
- स्वयं के प्रति कर्तव्य – स्वयं के विकास के लिये जिम्मेदार होना।

सन्दर्भ सूची –

1. अग्रवाल, कृष्ण चन्द्र, (2000), गागर में सागर की ओर (भाग प्रथम), जयपुरः ऊशा स्काउट गाइड पब्लिकेशन।
2. पॉवल, लार्ड बेडन, (1994), स्काउटिंग फॉर ब्वायज, दिल्लीः एन. एच. क्यू. पब्लिकेशन।
3. जौहरी, सोहन लाल, (2006), प्रगति पथ, दिल्लीः एन. एच. क्यू. पब्लिकेशन।
4. अग्रवाल, अमरनाथ, (2005), स्काउट गाइड आंदोलन, इतिहास एवं नियम, जयपुरः ज्ञानेन्द्र प्रकाशन।
5. अग्रवाल, कृश्ण चन्द्र (2006), A.P.R.O. II, दिल्लीः एन. एच. क्यू. पब्लिकेशन।
6. अग्रवाल, अमरनाथ (2008), प्रवेष से राश्ट्रपति, बरेली : हिन्द स्काउट गाइड प्रकाशन।
7. जैन, हरीष चन्द (2001), प्रवेष से राश्ट्रपति पुरस्कार, मथुरा : भाग्योदय स्काउट एवं गाइड सेवा योजना प्रकाषन।
8. शर्मा, शषि कुमार (2014), राष्ट्रपति अवार्ड के पथ पर, गुड़गांव : सत्य स्काउट गाइड प्रकाशन।
9. शर्मा, शषि कुमार (2014), सत्य स्काउट गाइड के पथ पर, गुड़गांव : सत्य स्काउट गाइड प्रकाशन।
10. जैन, एस. आर. (2014), स्काउट गाइड ज्योति, संस्करण जनवरी–जून 2014, जयपुर : प्रीमियम प्रिन्टिग प्रैस।
11. खन्ना, अषोक कुमार (2013), दिव्य संसार, संस्करण मार्च–जुलाई, बीकानेर : सांखला प्रिन्टर्स, षिव बाड़ी रोड़।